ज्ञानवती सक्सेना

बात

बात कुछ हमारी भी
बात कुछ तुम्हारी
दन्त–कथा बीड़े की बांचती सुपारी

इन्द्र–धनुष का सारा
रंग पोछ डाला
रंग दिया हवाओं ने
कीमती दुशाला

नंगापन देख रहा
बाल ब्रह्मचारी
मुखिया ने टीवी की आरती उतारी

सुविधा का शुल्क हुआ
लाख का खिलौना
लम्बा कद अपने ही
आप हुआ बौना

आंगन दीखे न कहीं
छत पर लाचारी
आशीषों से अनबन गाली से यारी

('नये–पुराने' गीत अंक–4, 1999 से साभार)

सुइयों का धर्म

सुइयों का धर्म रहा
अंत तक सिलाई
उनको क्या ज्ञात कहां बिक गई रजाई

कमलापति की नगरी
कामदार साड़ी
पति के रहते भी बा–राण सी पुकारी

पत्तल में जीम गये ब्याह के परोसे
बेटी की लाज सदा राम के भरोसे

फिरती थी एक नहीं
बिन दहेज क्वांरी
सब पानीदार रहे, थे नहीं भिखारी

रेखायें खींच रहा विद्यापति बैठा
खुशबू के वंश उगा माली पर ऐंठा

पानी को काट गई
सांसदी कटारी
खाई सी खोद गई बाप को उधारी।

सम्पर्क–
ए–1177–राजेन्द्र नगर
बरेली (उ.प्र.)